बदलाव को स्वीकार करना सीखें : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 23 मार्च।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि परिवर्तन प्रऔति का निमय है। सब बदलता रहता है। किन्तु परिवर्तन और बदलाव को स्वीकार करना कठिन है। जो समझदार होता है वही परिवर्तन को स्वीकार सकता है। हमें बदलाव को स्वीकार करना सीखना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ यहां के तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

आचार्यप्रवर ने केशी स्वामी और राजा प्रदेशी की कथा वाचन करते हुए कहा कि ''केशी स्वामी ने राजा के दिमाग को बदल दिया, चेतना को बदल दिया और अब बात समझ में आ गई कि पहले प्रदेशी राजा मानता था कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है यह सही नहीं है। शरीर अलग है और जीव अलग है।

आचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि ''हर व्यक्ति का यह चिंतन होना चाहिए कि मेरा निजी आदमी है, उसका आचरण अच्छा नहीं है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, व्यसन में रहता है सारा जीवन भोगविलास में गंवाता है। मरने के बाद उसकी गति अच्छी नहीं होगी। मैं इसका संबंधि हूं निकट का हूं तो मेरा कर्त्तव्य है कि मैं इसको समझाऊं नहीं तो मेरा निकट होना व्यर्थ होगा।''

''केशी स्वामी ने जो श्रम किया वह श्रम उनका सफल हो गया और उन्होंने सोचा कि मैं भी धन्य हो गया अब मुझे इस बात को गौरव है कि मैं जिस राजा का मैं निकट हूं मैंने अपना कर्त्तव्य निभा लिया। मैंने राजा को दुर्गति से बचा लिया।''

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आदमी का सुख-दुःख अपना-अपना होता है। एक आदमी दुःख भोग रहा है, दूसरा आदमी इसमें सहयोग यानी दुःख कम करने में सहयोग दे भी सकता है। आत्मा जैसा कर्म करती है उसके अनुसार सुख और दुःख की प्राप्ति हो जाती है। कर्मवाद का यह सिद्धांत है जो भारतीय विचारधारा में मान्य रहा है और आस्तिक दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी तुम जैसा कर्म करोगे वैसा फल पाओगे। सुख और दुःख का संबंध व्यक्ति की निज आत्मा के साथ है। व्यक्ति स्वयं मुख्यतया सुख और दुःख के लिए जिम्मेवार होता है। आचारांग भाष्य में सूत्र की व्याख्या में बताया गया है। कोई दूसरा आदमी सुख-दुःख को ले नहीं सकता।

सुख और दुःख है क्या? जिसको भोगने से अनुकूलता लगे वह सुख है, जिसको भोगने में कष्ट हो प्रतिकूलता हो वह दुःख होता है। जिसकी स्थिति सुखदायक है वह सुख है। अपनी आत्मा अपने कर्म के अनुसार सुख और दुःख को प्राप्त हो जाती है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

- अशोक सियोल

99829 03770